Dated 2/08/2020

B.A Part-2 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

बेंथम के उपयोगितावाद या परार्थसुखवाद

Ans. परार्थ सुखवाद के अनुसार व्यक्ति का स्वार्थ सुख जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। मानवजाति का कल्याण ही हमारे कर्मों का लक्ष्य होना चाहिए। यदि संपूर्ण मानवता का सुख साध्य करना संभव न हो तो अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। सुख को मानवमात्र के लिए उपयोगी बताने के कारण इसे उपयोगितावाद भी कहते हैं।

बेंथम के सुखवाद को निकृष्ट परार्थवाद भी कहते हैं इनके मत को निकृष्ट परार्थवाद इसलिए कहा जाता है कि ये 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुखों' में गुणात्मक अंतर नहीं मानते।

'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख' ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। अधिक से अधिक व्यक्तियों को अधिक से अधिक सुख पहुँचाना ही प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य हो जाता है। बेंथम सुखों में गुणात्मक भेद नहीं मानते। सुख गुण की दृष्टि से उच्च या निम्न कोटि के नहीं कहे जा सकते। सुखों में केवल परिणाम की दृष्टि से अंतर होता है। सुख के परिमाण को मापने के लिए बेंथम ने सात आयामों की चर्चा की है। वे हैं ⓐ तीव्रता ⓑ व्यापकता ⓒ उत्पादकता ⓓ शुद्धता ⓔ अवधि ⓕ निकटता ⓖ असंदिग्धता। इन सात आयामों के आधार पर सुख का परिमाण मापा जा सकता है। परार्थवाद का आधार मनोवैज्ञानिक सुखवाद बताया है। यह स्वभाव से ही सुखलाभ और दुःख निवृत्ति के लिए कर्म करते हैं। सुख और दुःख ही मनुष्य के कर्मों के प्रेरक हैं। इसलिए मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य सुख की प्राप्ति है।

—X—